

# हमारी पतंग



पढ़ना है समझना



ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)  
978-81-7450-874-4

**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** 2009(1931); 2010(1932); 2011(1933); 2011(1933); 2014  
(1936); 2015(1937); 2017(1939); 2018(1940); अगस्त 2018 श्रावण 1940;  
फरवरी 2019 फाल्गुन 1940; सितंबर 2020 भाद्रपद 1942; जून 2022 आषाढ 1944

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 5T RSP

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – कनक शशि

**सज्जा तथा आवरण** – निधि वाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, मानसी सिन्हा, अंशुल गुप्ता, नरेन्द्र कुमार वर्मा

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोग्रामिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा. अब्दुल्ला. खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगांतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा  
प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित।

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सप्रेसवे, होस्टेकेरे, बनाशंकरा III स्टेज, बंगलूरु 560 085  
**फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस, निकट: धनकल बस स्टॉप पतिहटी, कोलकाता 700 114  
**फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत* मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*  
मुख्य संपादक (प्रभारी) : *बिज्ञान सुतार* मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*

# हमारी पतंग



मिली की मम्मी



मिली



2

एक दिन मिली छत पर गई।  
आसमान में बहुत सारी पतंगें उड़ रही थीं।



मिली का मन हुआ कि वह भी पतंग उड़ाए।  
वह फ़ौरन नीचे आ गई।



4  
मिली ने माँ से पतंग उड़ाने के लिए कहा।  
पर घर में पतंग नहीं थी।



माँ ने कहा कि चलो पतंग बनाते हैं।  
मिली यह सुनकर खुश हो गई।



6

मिली माँ के साथ पतंग बनाने लगी।  
वह कागज़ और गोंद ले आई।



माँ कैंची और तीलियाँ ले आईं।  
दोनों मिलकर पतंग बनाने बैठ गईं।



8

माँ ने कागज़ काटा और तीली मोड़ी।  
उन्होंने मिली की मदद से तीली कागज़ पर चिपकाई।



9

फिर उन्होंने पतंग के बीचों-बीच दो छेद किए।  
ये छेद माँझे के लिए किए थे।



10

मिली ने पतंग के कोने पर अपना फ़ीता लगा दिया।  
उसने फूँक-फूँक कर गोंद सुखा दी।



दोनों छत पर पतंग उड़ाने पहुँच गईं।  
माँ ने छेदों में माँझा डाला।



12

माँ और मिली ने पतंग उड़ाना शुरू किया।  
मिली ने चरखी पकड़ी।

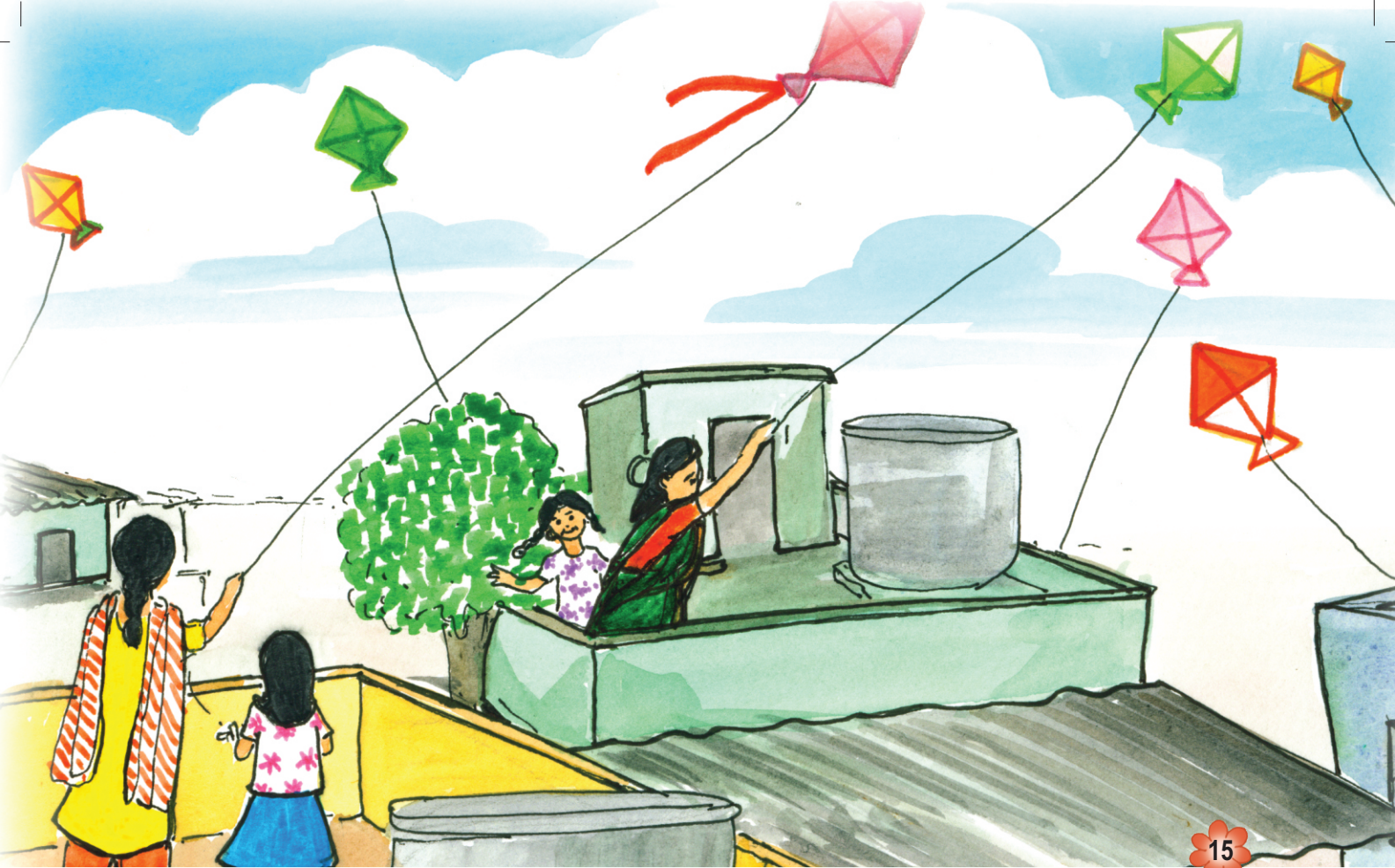


माँ ने माँझा ताना।  
थोड़ी देर में पतंग आसमान में उड़ने लगी।



14

उनकी पतंग बहुत ऊपर चली गई थी।  
मिली ताली बजा-बजा कर कूदने लगी।



तोसिया भी अपनी मम्मी के साथ पतंग उड़ा रही थी।  
दोनों पतंगें साथ-साथ उड़ने लगीं।



माँओं की पतंगें खूब ऊँची उड़ रही थीं।  
तोसिया और मिली हाथ में चरखी पकड़े उछल रही थीं।

# तोशिया और मिली की और कहानियाँ



अधिक जानकारी के लिए कृपया [www.ncert.nic.in](http://www.ncert.nic.in) देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।



2073

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी  
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)  
978-81-7450-874-4